किसानों के लिए
मुर्गीपालन

कृषि विज्ञान केन्द्र, रियासी

लेखक :
डा. मनदीप सिंह आजाद
डा. आर. के. अरोड़ा

प्राक्कथन

भारत में लगभग 50 लाख लोग मुर्गीपालन व्यवसाय से जुड़े हुए हैं और हर वर्ष सकल घरेलू उत्पाद में इसका 33 हज़ार करोड़ का योगदान है । मुर्गीपालन व्यवसाय भारत में 10 से 15 प्रतिशत वार्षिक औसत विकास दर से कृषि क्षेत्र का तेज़ी के साथ विकसित हो रहा एक प्रमुख हिस्सा है । इसके परिणामस्वरूप भारत अब (चीन और अमेरिका के बाद) विश्व का तीसरा सबसे बड़ा अण्डा उत्पादक तथा (अमेरिका, चीन, ब्राज़ील और मैक्सिको के बाद) चिकन माँस का 5वां बड़ा उत्पादक देश हो गया है । भारत में प्रति व्यक्ति 180 अण्डों की मांग के मुकाबले 58 अण्डों की उपलब्धता है । इसी प्रकार प्रति व्यक्ति वार्षिक 11 कि.ग्रा. माँस की मांग के मुकाबले केवल 2.2 कि. ग्रा. प्रति व्यक्ति माँस की उपलब्धता है । इस प्रकार घरेलू मांग को पूरा करने के लिए अण्डों के उत्पादन में चार गुणा तथा माँस के उत्पादन में छः गुणा वृद्धि किए जाने का आवश्यकता है । जनसंख्या में वृद्धि, जीवनचर्या में परिवर्तन, खानेपीने की आदतों में परिवर्तन, तेज़ी से शहरीकरण, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता, युवा जनसंख्या के बढ़ते आकार आदि के कारण कुक्कुट उत्पादनों की मांग में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है ।

मुर्गीपालन में प्रभावशाली वृद्धि होने के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में इसका प्रभाव नहीं दिख रहा जितना दिखना चाहिए । आज के विज्ञानिक युग में हर क्षेत्र में विज्ञान का भरपूर उपयोग हो रहा है । मुर्गीपालन क्षेत्र इस से वंचित नहीं रहना चाहिए । घर के पिछवाड़े मुर्गीपालन की परंपरागत पद्धति में भी विज्ञान का उपयोग करके आय के साथ–साथ उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है । जिस प्रकार अधिक पैदावार के लिए उन्नत किस्म के संकर बीजों की जरूरत होती है, उसी प्रकार मुर्गीपालन में उत्पादन क्षमता तथा गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मुर्गियों की अच्छी नस्ल की जरूरत है । आज ऐसी नस्ल की आवश्यकता है ताकि मुर्गियों के अन्य गुणों के साथ–साथ उत्पादन क्षमता तथा बढ़ोतरी दर अधिक हो । ग्रामीण जनसंख्या को अच्छी प्रोटीन प्राप्त हो सके तथा उनकी आय में वृद्धि हो सके । ग्रामीण मुर्गीपालन को प्रोत्साहन मिलना अति आवश्यक है । अगर किसान अपने घर के पिछवाड़े मुर्गीपालन को कमर्शियल लेयर/ब्रायलर की युनिट में बदल लें तो घर में खाने के उपयोग के अतिरिक्त आय का एक अच्छा साधन बना सकता है। किसानों के पास अपनी की ज़मीन होती है और शेड बनाने में खर्च भी अधिक नहीं आता है ।

मैं समझता हूँ कि मुर्गीपालन ग्रामीण परिवारों के लिए पोष्टिक आहार कि साथ आय का एक उत्तम विकल्प हो सकता है । मैं आशा करता हूँ कि कृषि विज्ञान केन्द्र रियासी द्वारा संकलित की गई यह पुस्तिका मुर्गीपालकों, सहयोगी विभागों, गैर सरकारी संगठनों, व्यवसायियों, शोध निकायों, अन्यों के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगी ।

(पी. के शर्मा)
कुलपति

सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ नं.
1.	मुर्गी के शरीर की रचना	1–2
2.	भारत में मुर्गीपालन	3–4
3.	मुर्गीपालन व्यवसाय क्या है	6
4.	ब्रायलर फार्मिंग क्या है	8
5.	फार्म के लिए जगह का चयन	9
6.	लीटर मैनेजमेंट	12
7.	ब्रूडिंग	14
8.	फीड व फीडिंग	16
9.	मुर्गियों के लिए पानी	19
10.	गर्मियों, बारिशों व सर्दियों में ब्रायलर का रख–रखाव	22
11.	लेयर फार्मिंग क्या है	27
12.	लेयर का भोजन	31
13.	लेयरस की नस्लें	32
14.	मुर्गी दाने से जुड़ी जानकारी	37
15.	मुर्गियों के लिए रोशनी	38
16.	बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग	41
17.	बैकयार्ड मुर्गों की कुछ नस्लें	42
18.	मुर्गीपालन एक लाभकारी व्यवसाय	51
19.	भारत में टर्की पालन	52
20.	टर्की में ब्रूडिंग	54
21.	टर्की का टीकाकरण	59

सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ नं.
22.	टर्की का अण्डा	59
23.	बटेर पालन	61
24.	एम्मू पालन	62
25.	बत्तख पालन – एक रोज़गार	65
26.	गिन्नी फाउल	68
27.	पोल्ट्री व्यवसाय में सावधानियां	69
28.	मुर्गियों में आने वाली सामान्य बिमारियां	70
29.	बर्डफ्लू क्या है	72
30.	पोस्टर्माटम	75
31.	मुर्गीपालन में कैरियर	77
32.	अण्डे से जुड़ी जानकारी	78

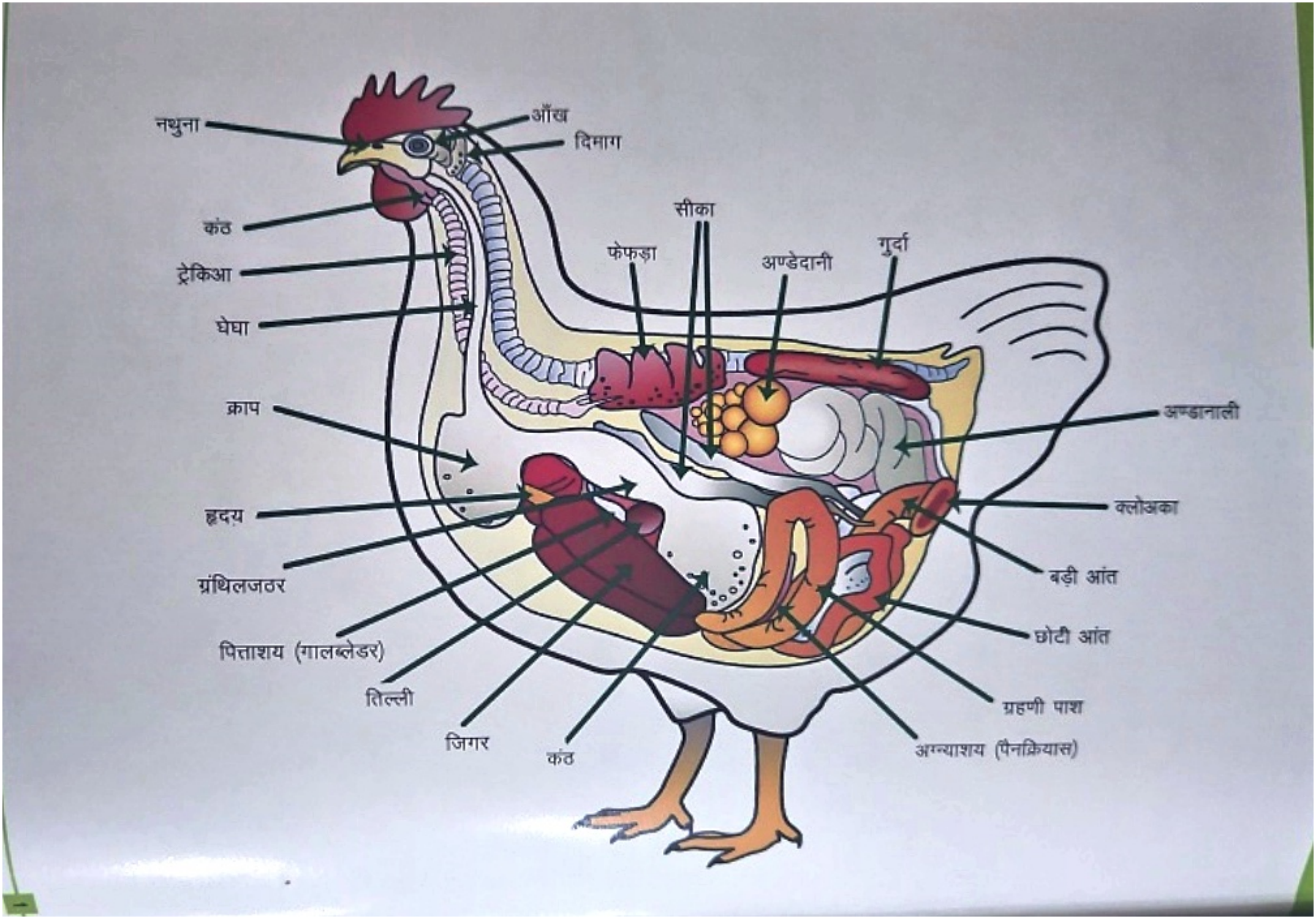
नथुना
आँख
दिमाग
कंठ
ट्रेकिआ
घेघा
सीका
फेफड़ा
अण्डेदानी
गुर्दा
क्राप
अण्डानाली
हृदय
क्लोअका
ग्रंथिलजठर
बड़ी आंत
छोटी आंत
पित्ताशय (गालब्लेडर)
तिल्ली
जिगर
कंठ
ग्रहणी पाश
अग्न्याशय (पैनक्रियास)

कलगी
चोंच
बाली
पक्षति

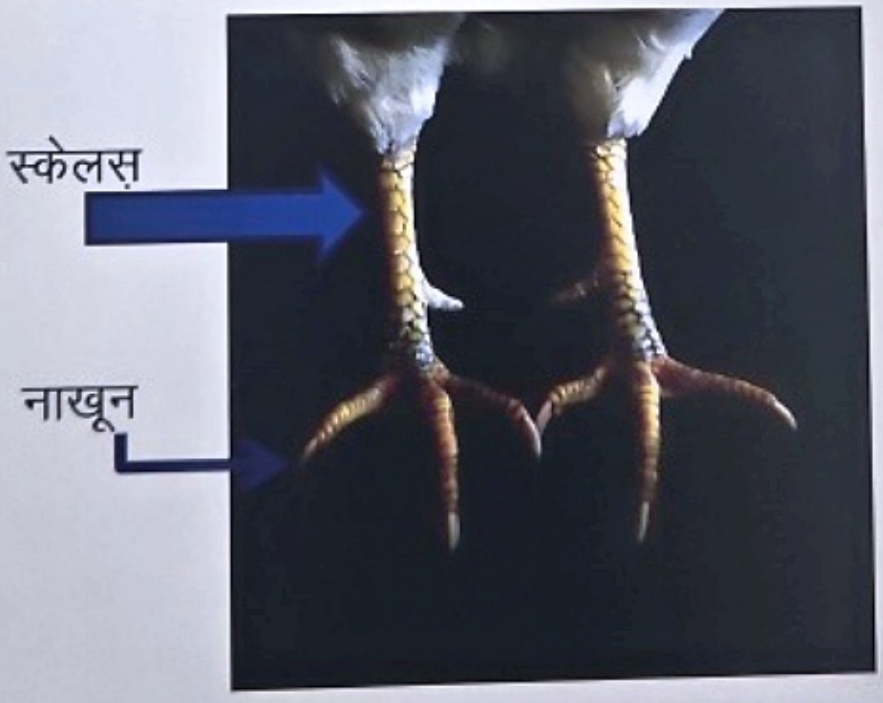
स्केलस़
नाखून

आज भारत में पोल्ट्री फार्मिंग / मुर्गी पालन एक सुविकसित व्यवसाय के रूप में उभर चुका है। मुर्गी पालन कम समय में अधिक से अधिक पैसे कमाने का व्यवसाय है। इसे छोटे किसान भी छोटे गाँव में कर सकते हैं बस उन्हें सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है। मुर्गी पालन व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय है जो आपकी आय का अतिरिक्त साधन बन सकता है। बहुत कम लागत से शुरू होने वाला यह व्यवसाय लाखों/करोड़ों का मुनाफा दे सकता है। इसमें शैक्षणिक योग्यता और पूंजी से अधिक अनुभव व मेहनत की दरकार होती है। अगर आपके पास औरों से अलग सोचने की क्षमता है तो आप मुर्गीपालन व्यवसाय से भी करोड़ों का मुनाफा कमा सकते हैं। मुर्गीपालन व्यवसाय पशुपालन के तहत ही आता है जिसका उद्देश्य देश में मीट और अंडों का प्रबंध करना है। भारत के लगभग 50 लाख लोग मुर्गीपालन व्यवसाय से जुड़े हुए हैं और हर वर्ष सकल घरेलू उत्पाद में इसका 33 हजार करोड़ का योगदान है। मुर्गीपालन व्यवसाय भारत में 10 से 15 प्रतिशत वार्षिक औसत विकास दर के साथ कृषि क्षेत्र का तेजी के साथ विकसित हो रहा एक प्रमुख हिस्सा है। इसके परिणामस्वरूप भारत अब विश्व का तीसरा सबसे बड़ा अण्डा उतपादक (चीन और अमेरिका के बाद) तथा चिकन मांस का 5वां बड़ा उत्पादक देश (अमरीका, चीन, ब्राजील और मैक्सिको के बाद) हो गया है। मुर्गीपालन क्षेत्र का सफल राष्ट्रीय उत्पाद में करीब 33000 करोड़ का योगदान है और कुछ वर्षों में इसके करीब 60,000 करोड़ रू: तक पहुंचने की संभावना है। 352 अरब रूपए से अधिक के कारोबार के साथ यह क्षेत्र देश में 50 लाख से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध् कराता है तथा इसमें रोजगार के अवसरों के बढ़ने की व्यापक संभवनाएं हैं। पिछले चार दशकों में मुर्गीपालन क्षेत्र में शानदार विकास के बावजूद कुक्कुट उत्पादों की उपलब्धता तथा मांग में काफी बड़ा अंतर है। भारत में प्रति व्यक्ति 180 अण्डों की मांग के मुकाबले 58 अण्डों की उपलब्धता है। इसी प्रकार प्रति व्यक्ति वार्षिक 11 कि.ग्रा. मीट की मांग के मुकाबले केवल 2.2 कि. ग्रा. प्रति व्यक्ति मीट की उपलब्धता है। इस प्रकार घरेलू मांग को पूरा करने के लिए अण्डों के उत्पादन में चार गुणा तथा मीट के उत्पादन में छः गुणा वृद्धि किए जाने की आवश्यक्ता है। जनसंख्या में वृद्धि जीवनचर्या में परिवर्तन, खानेपीने की आदतों में परिवर्तन, तेजी से शहरीकरण, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता, युवा जनसंख्या के बढ़ते आकर आदि के कारण कुक्कुट उत्पादनों की मांग में जबर्दस्त वृद्धि हुई है। वर्तमान बाज़ार परिदृश्य

में कुक्कुट उत्पाद उच्च जैविकीय मूल्य के प्राणी प्रोटीन का सबसे सस्ता उत्पाद है।

मुर्गीपालन व्यवसाय से भारत में बेरोजगारी भी काफी हद तक कम हुई है। आर्थिक स्थिति ठीक न होने पर बैंक से लोन लेकर मुर्गीपालन व्यवसाय की शुरूआत की जा सकती है और कई योजनाओं में तो बैंक से लिए गए लोन पर सरकार सबसिडी भी देती है। कुल मिलाकर इस व्यवसाय के जरिए मेहनत और लगन से सिफर से शिखर तक पहुंचा जा सकता है।

पिछले दो दशक में देश में पोल्ट्री फार्मिंग का चेहरा काफी बदला है। कॉन्ट्रैक्ट पोल्ट्री फार्मिंग के कन्सेप्ट ने जोर पकड़ा है और देखते ही देखते इस बिजनेस में किस्मत आज़माने वालों की तादाद बढ़ गई है। पोल्ट्री के इस मॉडल में एक बड़ा कारोबारी जिसे इन्टीग्रेटर या कॉन्ट्रैक्टर कहा जाता है, वो स्थानीय किसानों से पोल्ट्री फार्म चलवाता है। फार्म में चुजों की सप्लाई से लेकर रखरखाव की ज़िममेदारी इन्टीग्रेटर की होती है। कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग में इस बात पर ज्यादा जोर होता है कि किस तकनीक के सहारे उत्पादन बढाया जा सकता है। पोल्ट्री इंडस्ट्री के उत्पादन में करीब 70 फीसदी हिस्सा संगठित क्षेत्र का है जबकि बाकी असंगठित क्षेत्र का। मुर्गीपालन लाभकारी व्यवसाय है क्योंकि मुर्गी के व्यवसाय से सारे साल नियमित रूप से आय प्राप्ति सम्भव है। ब्रायलर इंडस्ट्री में दक्षिण के राज्य 60–70 फीसदी तक की हिस्सेदारी निभाते हें। आंध्र प्रदेश, तामिलनाडु और महाराष्ट्र अंडे के उतपादन में सबसे आगे हैं। देश में अंडे के कुल उत्पादन का (75) फीसदी हिस्सा महानगरों और दूसरे शहरी इलाकों में रहने वालों के बीच खपत होता है। देश में लोग ज़्यादातर ताज़ा काटा चिकन खाना चाहते हैं, लेकिन वक्त के साथ प्रोसेस्ड चिकन खाने का रिवाज भी बढ़ता दिख रहा है, जहां बेहतरीन पैकेजिंग के साथ चिकन को फ्रिज में रखा जाता है।

मुर्गी फार्म खोलने से पहले वैज्ञानिक जानकारी लेना अच्छा रहता है। इसके लिए कृषि विज्ञान केंद्र से ट्रेनिंग ली जा सकती है।

मुर्गीपालन व्यवसाय क्या है ?

मांस और अंडे की उपलब्धता के लिए मुर्गी को पालने के व्यवसाय को मुर्गीपालन कहा जाता है। बढ़ती मांग ने इस व्यवसाय को चार चांद लगाए हैं।

मुर्गीपालन व्यवसाय के लिये शैक्षणिक योग्यता :

इस व्यवसाय में आने के लिए शौक्षणिक योग्यता की अनिवार्यता नहीं होती। फिर भी, पशुपालन और जीव विज्ञान का ज्ञान होना जरूरी है।

मुर्गीपालन व्यवसाय के लिये आवश्यक व्यक्तिगत कौशल :

पोल्ट्री फार्म के व्यवसाय में कुछ कौशल होना अनिवार्य है। जिसमें से कुछ प्रमुख निम्न हैं।

- पौल्ट्री का ज्ञान हो, जिसमें मुर्गीयों की देखभाल भी शामिल है।
- मुर्गीयों के स्वास्थ्य की देखभाल करने का ज्ञान।
- मुर्गीयों को बीमारी से कैसे बचाना है, इसकी जानकारी।
- पोल्ट्री व्यवसाय के लिए मेहनती होना जरूरी है।
- पोल्ट्री फार्म के आसपास के इलाके का रखरखाव का ज्ञान होना।
- इस क्षेत्र के व्यवसायी के लिए स्वस्थ होना जरूरी है। उसे अस्थमा और दूसरी सांस संबंधी बीमारी नहीं होनी चाहिए।

मुर्गीपालन दो प्रकार के होते हैं :

1. ब्रायलर मुर्गीपालन मांस के लिए किया जाता है।
2. लेयर मुर्गी पालन अंडे के लिए किया जाता है।

- मुर्गीपालन लाभकारी व्यवसाय है क्योंकि मुर्गी के व्यवसाय से सारे साल नियमित रूप से आय प्राप्ति सम्भव है।
- मुर्गी पालन के धंधे का विस्तार भी बहुत आसान है क्योंकि एक अच्छी नस्ल की उन्नत मुर्गी साल भर में 220 से अधिक अंडे देने की क्षमता रखती है।
- यदि वैज्ञानिक तरीके अपनाते हुए तथा नियमित रूप से टीकाकरण करने के साथ मुर्गीपालन किया जाये तो इस व्यवसाय में जोखिम भी बहुत कम रहता है।

- मुर्गीपालन लाभकारी व्यवसाय है क्योंकि मुर्गीपालन को स्वरोज़गार के रूप में बेरोज़गार नौजवान, गृहणी तथा सेवानिवृत्त कर्मचारी भी सहजता से अपना कर एक अतिरिक्त आय का स्त्रोत बना सकते हैं।

- विशेषज्ञों का मानना है कि यदि योजनाबद्ध तरीके से मुर्गीपालन किया जाए तो कम खर्च में अधिक आय कमाई जा सकती है। बस तकनीकी चीजों पर ध्यान देने की जरूरत है।

- कभी–कभी लापरवाही के कारण इस व्यवसाय से जुड़े लोगों कों भारी क्षति उठानी पड़ती है। इसलिए मुर्गीपालन में ब्रायलर फार्म का आकार और बायोसिक्योरिटी / जैविक सुरक्षा के नियम पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

ब्रायलर मुर्गी क्या है ?

ब्रायलर मुर्गी का पालन मांस के लिए किया जाता है। ब्रायलर प्रजाति के मुर्गा या मुर्गी अंडे से निकलने के बाद 40 ग्राम के होते हैं जो सही प्रकार से दाना खिलाने के बाद 5–6 हफ्ते में लगभग 1.5 किलो से 2 किलो के हो जाते हैं। आज ब्रायलर फार्मिंग एक सुविकसित व्यवसाय के रूप में उभर चुका है। ब्रायलर मुर्गीपालन कम समय में अधिक से अकिध पैसे कमाने का व्यवसाय है। इसे छोटे किसान भी छोटे गाँव में कर सकते हैं उन्हें सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है। पुराने समय सें ग्रामीण इलाकों में मुर्गीयों को पाला जाता रहा है। लेकिन आज के इस दौर में मुर्गीपालन एक बड़े व्यवसाय के रूप में उभर गया है जो किसानों की जीविकापार्जन का प्रमुख साधन बन गया है। मुर्गीपालन से बेरोजगारी की समस्या पूरी तरह से दूर हो सकती है। ऐसे युवा मुर्गीपालन को रोजगार बना सकते हैं जो बेरोजगारी का जीवन जी रहे हैं। यदि ब्रायलर मुर्गीपालन को सही और उन्नत तरीके से कर सकते हैं तो यह कम खर्च में अधिक आय दे सकता है। मुर्गी पालन में कुछ तकनीकी बातों के बारे में पता होना चाहिए और बायोसिक्योरटी जैविक सुरक्षा के नियम का पालन करना बहुत जरूरी होता है। ब्रायलर चूजों में किसी भी प्रकार की स्वस्थ सम्बन्धी असुविधा के लिए तुरंत अपने नजदीकी पशु विशेषज्ञ से सलाह लें।

फार्म के लिए जगह का चयन

- जगह समतल हो और कुछ ऊंचाई पर हो, जिस से की बारिश का पानी फार्म में जमा ना हो सके।
- मुख्य सड़क से ज्यादा दूर ना हो जिस से लोगों का और गाड़ी का आना जाना सही रूप से हो सके।
- बिजली और पानी की सुविधा सही रूप से उपलब्ध हो।
- चूजे, ब्रायलर, दाना, दवाईयाँ आदि आसानी से उपलबध हों।
- ब्रायलर मुर्गी बेचने के लिए बाज़ार पास में हो।

फार्म के लिए शेड का निर्माण

- शेड हमेशा पूर्व–पश्चिम दिशा में होना चाहिए और शेड के जाली वाला साइड उत्तर–दक्षिण दिशा में होना चाहिए जिससे की हवा सही रूप से शेड के अन्दर से बह सके और धूप अन्दर ज्यादा ना लगे।
- एक शेड को दूसरे शेड से थोड़ा दूर–दूर बनायें। आप चाहें तो एक ही लम्बे शेड को बराबर भाग में दीवार बना कर भी बाँट सकते हैं।
- शेड की चौड़ाई 30–35 फुट और लम्बाई जरूरत के अनुसार आप रख सकते हैं।
- शेड का फर्श पक्का होना चाहिए।
- शेड के दोनों ओर जाली वाले साइड में दीवार फर्श से मात्र 6 इंच ऊँची होनी चाहिए।

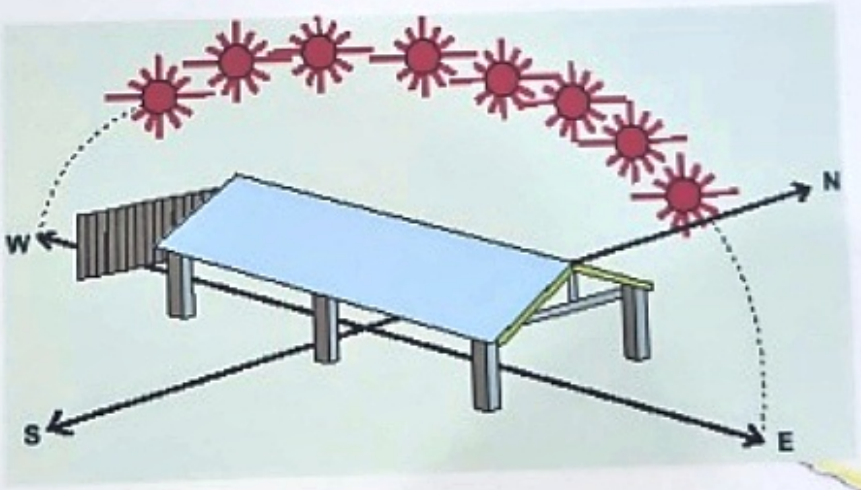

- शेड की छत को सीमेंट के एसबेस्टस की चादर या घास से बनाना चाहिए और बीच–बीच में

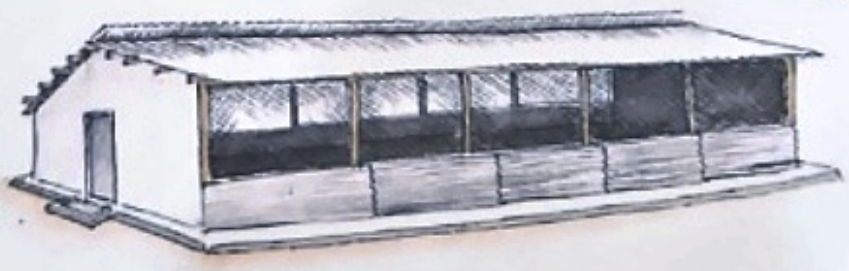

हवा का सही संचरण के लिए जगह भी होनी चाहिए। चादर की दोनों साइड में 3 फीट तक चादर बाहर को रखें जिससे की बारिश के बौछार से शेड ना भीग जाये।

- इसके अलावा, छत की गर्मी कम करने के लिए छत पर धान की पुआल या घास आदि डाल दें या फिर छत पर सफेदी करा दें। सफेद रंग ऊष्मा को कम सोखता है, जिससे छत ठंडी रहती है।
- शेड की साइड की ऊँचाई फर्श से 8–10 फुट ऊँची होनी चाहिए वा बीच–बीच की ऊँचाई फर्श से 14–15 फुट ऊँची होनी चाहिए।
- शेड के अन्दर बिजली के बल्ब, दाना व पानी के बर्तन, पानी की टंकी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
- ब्रायलर फार्म में एक वर्ग फीट स्पेस प्रति चुजे के अनुसार स्थान दिया जाता है और लेयर के लिए 2–2.5 वर्ग फीट प्रति बड़ी मुर्गी के हिसाब से जगह की जरूरत होती है। यानि 30 फीट X 100 फीट (कुल 3,000 वर्ग फीट) के कमरे/हॉल में मुर्गी पालक 3,000 ब्रायलर और 1,200 से 1500 लेयर रख सकते हैं।

दाने और पानी के बर्तनों की जानकारी :

प्रत्येक 100 चूजों के लिए कम से कम 3 पानी और 3 दाने के बर्तन होना बहुत ही आवश्यक है।

दाने और पानी के बर्तन आप मैन्युअल या आटोमेटिक किसी भी प्रकार का इस्तेमाल कर सकते हैं। मैन्ययुअल बर्तन साफ करने में आसान होते हैं लेकिन पानी देने में थोड़ी कठिनाई होती है पर आटोमेटिक पानी वाले बर्तनों में पाइप सिस्टम होता है जिससे टंकी का पानी सीधे पानी के बर्तन में भर जाता है।

लीटर मैनेजमेंट (बुरादे की देख–रेख)

- बुरादा या लीटर के लिए आप लकड़ी का पाउडर, मूंगफली का छिलका या धान के छिलके का उपयोग कर सकते हैं।
- चुजे आने से पहले लिटर की 3–4 इंच मोटी परत फर्श पर बिछाना आवश्यक है।
- लिटर पूरा नया होना चाहिए एवं उसमें किसी भी प्रकार का संक्रमण ना हो।
- शेड के अन्दर बुरादे या लिटर से अमोनिया उत्पन्न होने से रोकने के लिए हर हफ्ते एक दो बार लिटर में 1 किलोग्राम 20 वर्गफुट चूना छिड़क कर बुरादा/लिटर को खोद कर उलट–पुलट कर भरें। इससे लिटर सूखा रहता है और अमोनिया उत्पन्न नहीं हो पाता।
- सफल ब्रायलर उत्पादन में लीटर का महत्वपूर्ण स्थान है। बुरादा सदैव सूखा मिट्टी रहित होना चाहिये।
- इस्तेमाल करने से पहले इसे सम्भावित फफूंद और कीटाणु से मुक्त कर लें। इसके लिये इसमें फफूंद नाशक एवं कीटाणुनाशक का स्प्रे करें।
- शुरू में एक से डेढ़ इंच बुरादा बिछायें। दूसरे सप्ताह इसमें और बुरादा मिलाकर दो इंच कर दें। तीसरे–चौथे सप्ताह में धीरे–धीरे बढ़ाकर तीन से साढे तीन इंच कर दें। इस से बिछावन में नमी की मात्रा कम बढ़ेगी। अन्यथा अमोनिया का उत्पादन होगा एवं कीटाणु बढ़ने की रफ्तार बहुत तेज होगी। खूनी पेचिश का प्रकोप बढ़ जाता है।

- आरम्भ में अच्छे बिछावन में नमी 12–15 प्रतिश्त से अधिक नहीं होनी चाहिये। इसके बाद 30 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं होनी चाहिये अन्यथा वह बैक्टिेरिया जो बिछावन को सड़ने से बचाता है पक्षी की बीट को हजम करने का काम नहीं

करेंगे।

- लीटर में केक (पपड़ी) बन रहा है तो गुड़ाई (रेकिंग) करके बिछावन को सुधारना चाहिए। पपड़ी को निकालकर नया बुरादा मिला दें।
- सही मात्रा और सही नमी के बिछावन में बैक्टेरिया (किटाणु) जो बीट को हज़म करके लीटर को बनाये रखते हैं ठीक तरह से अपना काम करते हैं। इस किया में लीटर सूखा बना रहता है और अवश्यक गर्मी भी बनी रहती है परन्तु यदि नमी 30 प्रतिशत से अधिक हो जाये और कमरे का तापमान 50° F से कम हो तो कीटाणु की किया कमज़ोर पड़ जाती है। जिससे लीटर जमना शुरू हो जाता है और शैड में कीचड़ सा हो जाता है अतः लीटर को हमेशा सही बनाये रखना आवश्यक है।

अमोनिया

- अमोनिया जो हर ब्रायलर शैड में उत्पन्न होती है, कितनी हानिकारक है इसका अन्दाजा अभी हमारे मुर्गीपालन उद्योग को नहीं है और यदि है भी तो उसे हम गम्भीरता से नहीं लेते हैं।
- 2.5 – पी.पी.एम. या इससे अधिक अमोनिया से वजन पर तो असर पड़ता ही है साथ में एफ.सी.आर. भी खराब होता है। यही नहीं साँस की बीमारी और काक्सी का भी प्रकोप हो सकता है। वैक्सीन द्वारा उत्पन्न अवरोधक क्षमता (Immunity) भी टूट सकती है। अमोनिया अधिक होने पर अमोनिया बर्न भी हो सकता है। आँख के चारों ओर काली रिंग बन जाती है। पानी आने लगता है और चूजे आँख को रगड़ते हैं।
- 0 पी.पी.एम. पर शैड में कोई महक नहीं होगी।
- 25 पी.पी.एम. पर आपको थोड़ी सी नाक को लगने वाली महक आयेगी।
- 50 पी.पी.एम. पर नाक में कड़वी महक और आँख में जलन सी महसूस होगी।
- 25 पी.पी.एम. से अमोनिया की मात्रा कम रखने के लिए हमें बुरादे की मात्रा उचित रखनी होगी – बुरादे में नमी 30 प्रतिशत से कम रखनी होगी। साथ में हवा का सही संचरण रखना होगा। (गुड़ाई) द्वारा बुरादे को सही बनाये रखना होगा।

ब्रूडिंग

- चूज़ों के सही प्रकार से विकास के लिए ब्रूडिंग सबसे ज्यादा आवश्यक है। ब्रायलर फार्म का पूरा व्यापार पूरी तरीके से ब्रूडिंग के ऊपर निर्भर करता है। अगर ब्रूडिंग में गलती हुई तो आपके चूजे 7–8 दिन में कमज़ोर हो कर मर जायेंगे या आपके सही दाना के इसतेमाल करने पर भी उनका विकास सही तरीके से नहीं हो पायेगा।
- जिस प्रकार मुर्गी अपने चूजों को कुछ–कुछ समय में अपने पंखों के नीचे रख कर गर्मी देती हैं उसी प्रकार चुजों को फार्म में भी ज़रूरत के अनुसार तापमान देना पड़ता है।
- ब्रूडिंग कई प्रकार से किया जाता है – बिजली के बल्ब से, गैस ब्रूडर से या अंगीठी / संगड़ी से।

ब्रूडिंग तापमान

पहला सप्ताह – 90 डिग्री **F** – 95 डिग्री **F** ।

दूसरे सप्ताह – 5 डिग्री **F** प्रतिदिन तापमान कम करते जाएँ जब तक चूजों को ठण्ड ना लगने के अनुसार।

ब्रुडिंग दो प्रकार से की जाती है :

बैटरी ब्रूडिंग :–

इस ढंग से 3–4 सप्ताह तक चूजों को पिंजरों में पाला जाता है। उसके बाद चूजों को शेडों में वितरित कर दिया जाता है। प्रति चूजे के लिए 0.093 वर्गमीटर जगह की

आवश्यकता होती है। यह इकाई सामान्यतः 5 टायरों के समूहों में होती है इसे गैस या कैरासीन ऑयल जलाकर गर्म किया जाता है। दाने व पानी के बर्तन प्रत्येक इकाई के अन्त में किनारे पर लगाए जाते हैं। जिन कमरों में बैटरी ब्रूडरों को रखा जाता है उनमें 18–20 डिग्री सैल्सियस तापमान रखते हैं। इस प्रकार चूजों को पालने में कम स्थान की आवश्यकता होती है।

होवर टाईप ब्रूडिंग :–

होवर पिरामिड के आकार का होता है जिसमें उसे गर्म करने की इकाई लगी होती है इसे ब्रूडर हाउस में रखते है। 2 मीटर व्यास वाले होवर में 500 चूजे रखे जा सकते है। होवर का तापमान उपरोक्त तालिका के अनुसार रखते है तथा कमरे का तापमान 70 डिग्री फारेनहाइट रखते है। यह ढंग छोटे एवं बड़े दोनों मुर्गी–पालकों के लिए उपयोगी है। चूजों को बिना होवर के भी पाला जा सकता है। इस ढंग में पूरे कमरे का तापमान उपरोक्त तापमान तालिका के अनुसार रखते है।

बिजली के बल्ब से ब्रूडिंग

इस प्रकार के ब्रूडिंग के लिए आपको नियमित रूप से बिजली की आवश्यकता होती है। गर्मी के महीने में प्रति चूजे को 1 वाट की आवश्यकता होती है जबकि सर्दियों के महीने में प्रति चूजे को 2 वाट की आवश्यकता होती है। गर्मी के महीने में 4–5 दिन तक ब्रूडिंग की जाती है और सर्दियों में 8–10 दिन ।

ब्रायलर मुर्गीयों का टीकाकरण

हमेशा स्वस्थ मुर्गीयों का ही टीकाकरण करें और बीमार मुर्गीयों को ठीक करने के लिए एंटीबायोटिक दें। यदि वैज्ञानिक तरीके अपनाते हुए तथा नियमित रूप से टीकाकरण करने के साथ मुर्गीपालन किया जाये तो इस व्यवसाय में जोखिम भी बहुत कम रहता है।

दिन	वैक्सीन या टिके का नाम	देने का तरीका
6–7 दिन के भीतर	लासोटा वैक्सीन / रानीखेत बीमारी के लिए	आँख या नाक में बूंद डालने के द्वारा
10–12 दिन के भीतर	इन्फेक्शन ब्रूसल बीमारी या गुम्ब्रो के लिए	ठण्डे या बर्फ वाले पानी में, दूध या दूध के पाउडर के साथ
18–21 दिन के भीतर	लासोटा वैक्सीन का बूस्टर वैक्सीन	ठण्डे या बर्फ वाले पानी में, दूध या दूध के पाउडर के साथ
24–30 दिन के भीतर	गुम्ब्रो (बिनरी) के लिए बूस्टर वैक्सीन	ठण्डे या बर्फ वाले पानी में, दूध या दूध के पाउडर के साथ

फीड एवं फीडिंग

अच्छे उत्पादन के लिए यदि चूजों को तीन तरह का अलग–अलग राशन दिया जाये तो बेहतर होगा।

0 से 10 दिन तक	प्री स्टार्टर
11 से 24 दिन तक	स्टार्रअर
25 दिन से बाजार करने तक	फिनीशर

इन तीनों में प्रोटीन और एनर्जी की मात्रा भिन्न–भिन्न होगी।

	प्रोटीन	एनर्जी
प्री स्टाटर	23–24%	2900 K Cal
स्टार्टर	21–22%	2500 K Cal
फिनीशर	19–20%	3000 K Cal

- एक फीड से जब दूसरे फीड में बदलना है तो धीरे–धीरे बदलें। प्री स्टार्टर में जाने के लिए पहले दिन 3 भाग प्री स्टार्टर और 1 भाग स्टार्टर मिलाकर खिलायें और उसके बाद दोनों आधा–आधा आपस में मिलाकर दो दिन खिलायें। अन्त में 1 भाग प्री स्टार्टर और 3 भाग स्टार्टर मिलाकर 2 दिन खिलायें। इसके बाद केवल स्टार्टर। इसी प्रकार जब स्टार्टर से फिनीशर में बदलें तो धीरे–धीरे बदलें।
- ऐसा न करने पर वजन में कमी आ सकती है और आन्तों में सूजन हो सकती है जिसके कारण किसी बीमारी का हमला भी हो सकता है।
- ब्रायलर उद्योग में सफलता के लिये कम समय, कम फीड पर अधिक से अधिक

वजन प्राप्त करना आवश्यक है। आमतौर पर चार सप्ताह में 1700 ग्राम फीड पर एक किलो वज़न से अधिक प्राप्त करना सफलता की निशानी होती है ।

- ब्रायलर उत्पादन में फीड अकेले कुल खर्च का लगभग 50 प्रतिशत भाग है। अतः हर साल में इसका संतुलित होना आवश्यक है। साथ ही फीड को बरबाद होने से बचाना भी आवश्यक है।

- प्रारम्भ के तीन चार दिन फीडर पूरे भरे होने चाहिये। जो फीड गिरेगी वह अखबार पर गिरेगी। इस के बाद दो सप्ताह तक आधा भाग फीड भरें। तीसरे सप्ताह से अन्त तक 1/3 से ज्यादा फीड फीडरों में न भरें। इस तरह आप काफी फीड बरबाद होने से बचा सकते हैं।

- शैड में अगर तापमान 70°Fसे कम हो तो भी लागत ज्यादा आयेगी।

- अगर बुरादे में नमी जयादा है तो दाने की खपत बढ़ेगी। फीड में यदि इनर्जी (उर्जा) की मात्रा कम हो तो भी खपत बढ़ जायेगी। फीड की खपत बढ़ना गलत नहीं लेकिन खपत के अनुपात में वज़न बढ़ रहा है कि नहीं यह महत्वपूर्ण है।

- ब्रायलर की उम्र के हिसाब से फीडर की ऊँचाई बढ़ती रहनी चाहिये। भले ही

सप्ताह में दो बार बढ़ाना पड़े।

- सफल ब्रायलर उत्पादन के लिए संतुलित आहार का होना जितना आवश्यक है उतना ही उसका पैलेटेबल होना भी आवश्यक है। साथ ही फीड में पड़े खाद्यापदार्थ की पाचनशीलता जितनी अधिक होगी उतना ही अच्छा वजन कम फीड पर ब्रायलर का आयेगा।

फीड की खपत व वजन

आपका मैनेजमेंट कितना सफल है उसके आंकलन करना ज़रूरी है कितना फीड और कितना वजन बढ़ा ।

सप्ताह	मृत्युदर प्रतिशत	औसत वजन ग्राम	फीड प्रतिदिन प्रतिग्राम	फीड प्रति सप्ताह ग्राम	कुल फीड ग्राम	फीड रूपान्तरण
1	14	120	16.4	115	115	0.95
2	2.4	306	48	336	451	1.47
3	2.8	615	81	567	1018	1.65
4	3.2	1020	115	805	1823	1.78
5	3.6	1426	131	917	2740	1.92
6	4.5	1775	150	1050	3790	2.15

- सफलता के लिए हर सप्ताह बिना छांटे 50 चूजे तौल लें। उस सप्ताह तक कितना फीड खाया उसका योग करके अनुपात निकाल लें। जिससे भी आप चूजे लेते हैं उससे चार्ट ले लें। उससे तुलना करें और हर बार कोशिश करें कि आपका रिकार्ड बेहतर हो।
- किसी भी सप्ताह अनुपात सही न हो तो कारणों का पता लगाकर उसे तुरन्त दूर करें। ऐसा करने पर आपको टारगेट मिल जायेगा। अगर देर से पता चला तो आपको सुधार का मौका नहीं मिलेगा।
- यहां पर एक फाम्र के रिकार्ड को मार्गदर्शन के लिए दिया जा रहा है। आपकी कौशिश होनी चाहिये कि आपको इससे भी बेहतर रिकार्ड प्राप्त हो।

पानी

- चूजों को केवल वही साफ पानी पिलायें जो आप स्वयं पी सकते हो।
- पानी का तापमान ठण्ड के मौसम में कमरे के तापमान से कम न हो जबकि गर्मी में जितना ठण्डा हो उतना बेहतर है।
- 22°C से अधिक तापमान का पानी उचित नहीं।
- पानी सदैव उपलब्ध हो और बर्तन की ऊंचाई चूजों की पीठ से न ऊंची हो न नीचे। ऊंचाई को सदैव ठीक करते रहें।
- आम भाषा में पानी खारा या नमकीन न हो। न ही पानी गन्दा, मटमैला हो न ही उसमें कोई जीवाणु व कीटाणु हों।
- आवश्यक्ता अनुसार पानी के बर्तनों की संख्या पूरी होनी चाहिये, बल्कि गर्मी में संख्या बढ़ाकर दुगुनी कर दें। छोटे बच्चों में शुरू के 4–5 दिन उन्हें 3–4 फुट से अधिक पानी के लिए चलना न पड़े।
- पानी के बर्तनों की सफाई दिन में दो बार सुबह और शाम जूट या मूंज से रगड़ कर अवश्य करें। बाद में लाल दवा (पोटाशियम) या ब्लीचिंग पाऊडर या किसी अच्छे कीटाणुनाशक में खंगाल लें। अगर दो सैट हों तो एक को रोज़ धूप में रख दें।

पानी कैसा हो

कुल कीटाणु प्रति एम. एल.	100 से कम
ई कोलाई प्रति लीटर	0
जैविक अंश एम.जी. प्रति लीटर	3 से कम
नाईट्रेस एम. जी. प्रति लीटर	30 से कम
आयरन एम. जी. प्रति लीटर	0.3
मैगनीज एम. जी. प्रति लीटर	0.1
कापर एम. जी. प्रति लीटर	1
जिंक एम. जी. प्रति लीटर	5
कैलशियम एम. जी. प्रति लीटर	75
मैगनिशियम एम. जी. प्रति लीटर	50
सल्फेटस एम. जी. प्रति लीटर	200
क्लोराईडस एम. जी. प्रति लीटर	200
पी. एच.	6.5–7.5

- पानी की टंकी ढकी हो और सप्ताह में एक बार अवश्य ठीक ढंग से साफ की जाये। ब्लीचिंग पाऊडर थोड़े से पानी में मिलाकर हर जगह रगड़ कर धो लें।
- उचित होगा यदि पानी में 0.2 ग्राम से 0.5 ग्राम ब्लीचिंग पाऊडर प्रति क्यूबिक फिट (26–28 लीटर) मिलाकर पीने को दिया जाये। जब भी टंकी खाली हो उसमें नापकर ब्लीचिंग पाऊडर डाल कर भर दें और दो घंटे बाद प्रयोग में लायें। इससे पानी के कीटाणु जहां समाप्त होगें वहीं बहुत से तत्व का हानिकारक असर कम हो जायेगा। यह पानी वैक्सीनेशन के समय न दिया जाये। ब्लीचिंग पाऊडर में 33 प्रतिशत क्लोरिन होना चाहिये। आज कई दूसरे वाटर सेनीटाइजर आ रहे हैं जिनका असर देर तक रहता है।
- ध्यान रहे पानी जो टयूबवैल या हैंडपम्प से लिया जाता है वह जरूरी नहीं दोषमुक्त हो। अतः समय–समय पर जांच करवाते रहें।

पीने का पानी

- ब्रायलर मुर्गा 1 किलो दाना खाने पर 2–3 लीटर पानी पीता है। गर्मियों में पानी का पीना दोगुना हो जाता है। जितने सप्ताह का चूजा उसमें 2 का गूणा करने पर जो मात्रा आएगी, वह मात्रा पानी की प्रति 100 चूजों पर खपत होगी, जैसे

  पहला सप्ताह – 1 X 2 = 2 लीटर पानी 100 चूजा

  दूसरा सप्ताह – 2 X 2 = 4 लीटर पानी 100 चूजा

- गर्मी के मौसम में चूजों के फार्म पर पहुँचते ही विटामिन सी इलेक्ट्रोलाइट पाउडर वाला पानी पिलायें।

- गर्मीयों में पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ा दें क्योंकि गर्मी के मौसम में मुर्गिया पानी के बर्तन के चारो ओर बैठ जाती हैं जिससे दूसरी मुर्गीयों को पानी नहीं मिल पाता है।

ब्रायलर मुर्गीयों के लिए जगह का हिसाब

सप्ताह	वर्गफुट/चूज़े
पहला सप्ताह	1 वर्गफुट/ 3 चूज़े
दूसरा सप्ताह	1 वर्गफुट/2 चूज़े
तीसरा सप्ताह से 1 किलो होने तक	1 वर्गफुट/1चूज़ा
1 से 1.5 किलोग्राम तक	1.25 वर्गफुट/1चूज़ा
1.5 किलोग्राम से बिकने तक	1.5 वर्गफुट/1 चूज़ा

सही प्रकार से चूज़ों को जगह मिलने पर चुज़ों का विकास अच्छा होता है और कई प्रकार की बिमारीयों से भी उनका बचाव होता है।

ब्रायलर मुर्गीयों के लिए लाइट या रोशनी का प्रबंध

चूज़ों को 23 घंटे लाइट देनी चाहिए और एक घंटे के लिए लाइट बंद करनी चाहिए, ताकि चूज़े अंधेरा होने पर भी ना डरें। पहले 2 सप्ताह रोशनी में कमी नहीं होनी चाहिए क्योंकि इससे चूज़े स्ट्रेस फ्री रहते हैं और दाना पानी अच्छे से खाते हैं। शेड की रोशनी को धीरे–धीरे कम करते जाना चाहिए।

गर्मीयों के महीने में ब्रायलर मुर्गीयों की देखभाल कैसे करें ?

- पानी के बर्तन उचित संख्या में लगायें – 100 चूज़ों के लिए 3–4 बर्तन।
- दिन के समय ब्रूडिंग ना करें।
- बुरादे में मोटाई 1.5 – 2 इंच रखें।
- शेड में हवा का सही संचरण रखें। हवा सही रूप से शेड के अन्दर से बह सके। पर्दों को दिन–रात दोनों समय खुला रखें।
- संभव हो सके तो छत पर पानी स्प्रिंकलर लगायें या भूसा के नाड़े छत पर बिछाएं।
- गर्मी से उत्पन्न होने वाले स्ट्रेस को कम करने के लिए विटामिन–सी पानी में दें।
- मुर्गीयों को 1–1.5 किलो होते ही बिक्री शुरू कर दें।
- 750 ग्राम से ऊपर वाले मुर्गियों को 10 बजे से शाम के 5 बजे तक दाना न दें या फीडर को ऊपर उठा दें।
- हो सके तो शेड के क्षमता से 20 प्रतिशत कम मुर्गियां रखें।
- चूज़ों के फार्म पर पहुँचते ही इलेक्ट्रोलाइट पाउडर वाला पानी पिलायें।

- चूज़ों को 5–6 घंटे तक यही पानी पीने को दें।
- गर्मीयों में पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ा दें, क्योंकि गर्मी के मौसम में मुर्गियां पानी के बर्तन के चारों ओर बैठ जाती हैं जिससे दूसरी मुर्गियों को पानी नहीं मिल पाता है।
- गर्मीयों में कमरे में एक्जॉस्ट फैन लगा कर हवा का सही संचरण रखें।
- तेज गर्मी में अगर मुर्गियों को एक घंटे भी पानी न मिले तो हीट स्ट्रोक से उनकी मृत्यु हो सकती है।
- पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ाने के साथ ही यह भी ध्यान रखें कि धातु के बर्तन में पानी जल्दी गर्म हो जाता है और आमतौर पर मुर्गियां गर्म पानी नहीं पीती हैं। इसलिए अगर धातु के बर्तन में पानी रखा है तो थोड़ी–थोड़ी देर में उसमें ताज़ा पानी भरते रहें। अगर हो सके तो मिट्टी के बर्तन में पानी रखें।
- इसके अलावा मुर्गियों को दिए जाने वाले दाने को गीला कर सकते हैं गीला दाना ठंडा होगा जिसका मुर्गियां ज्यादा सेवन करेंगी। परन्तु ध्यान रखें कि गीला किया दाना शाम तक खत्म हो जाए वर्ना उसमें बदबू आ सकती है। दाने की बोरी को कभी भी गीला न करें।
- किसी मुर्गी में गर्मी लगने के लक्षण दिखाई दें तो उसे धीरे से उठा कर पानी से एक डुबकी देकर छांव में रख दें और स्वस्थ होने पर वापस बाड़े में डाल दें। यह प्रक्रिया तुरंत की जानी आवश्यक है। देर होने पर मुर्गी मर सकती है।

बारिश के महीने में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल कैसे करें ?

- मौसम के अनुसार ब्रूडर का उचित तापमान रखें।
- शेड में हवा का सही संचरण रखें। पर्दों को दिन–रात दोनों समय खुला रखें अगर बारिश ज्यादा हो तो ढक दें।
- शेड के अन्दर पानी जमा होने ना दें।
- बुरादे की मोटाई 2–3 इंच रखें।
- बारिश के महीने में शेड के अन्दर आना–जाना कम करें।
- चूज़ों के फार्म पर पहुँचते ही इलेक्ट्रोलाइट पाउडर + पोटाशियम परमैंगनेट वाला पानी पिलायें।
- चूज़ों को 5–6 घंटे तक यही पानी पीने को दें उसके बाद 6–8 घंटे मक्के का दलिया और उसके बाद प्री स्टार्टर दें।

सद्रियों के मौसम में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल कैसे करें ?

- शेड के परदे चूजों के आने के 24 घंटे पहले से ही ढक कर रखें।
- चूजों के आने के कम से कम 2–4 घंटे पहले ब्रूडर चला हुआ होना चाहिए।
- पानी पहले से ही ब्रूडर के नीचे रखें इससे पानी भी थोड़ा गर्म हो जायेगा।
- अगर ठण्ड ज्यादा हो तो ब्रूडर को कुछ समय के लिए हवा निरोधी भी आप बना सकते हैं। किसी भी पोलीथीन से छोटे गोल शेड को ढक कर।
- सर्दियों के महीने में चूजों की डिलीवरी सुबह के समय कराएँ, शाम या रात को बिलकुल नहीं क्योंकि शाम के समय ठण्ड बढ़ती चली जाती है।

ब्रायलर मुर्गी फार्म की बायोसिक्यूरिटी से जुड़ी जानकारी

- ब्रायलर मुर्गी के दाना को साफ सूखे स्थान पर रखें क्योंकि यह खुला और पुराना हो जाने पर दाने में फफून लग जाते हैं जो चूजों और मुर्गियों के स्वास्थ के लिए खराब होता है।
- शेड के बाहर तथा अन्दर महीने में 3–4 बार चूने का छिड़काव करें।

- बाहर के व्यक्तियों, कुत्ते, बिल्ली, चूहे और बाहरी पक्षियों को फार्म के भीतर तथा फार्म के पास न जाने दें। इससे फार्म में बाहर से इन्फेक्शन आने का खतरा बढ़ता है।
- मुर्गी डीलर की गाड़ी को शेड से दूर रोकें। पास ले जाने पर दूसरे फार्म से इनफैक्शन आने का खतरा होता है।
- फार्म के शेड के अन्दर घुसने से पहले अपने रबर के जूतों को पहनें और पहन कर 3 प्रतिशत फोर्मलिन में डूबा कर अन्दर घुसें।
- एक शेड से दुसरे शेड में जाने से पहले अपने रबर के जूतों को दोबारा 3 प्रतिशत फोर्मलिन में डुबायें या प्रति शेड के लिए अलग–अलग जूतों का इसतेमाल करें तथा हाथों को साबुन से अच्छे से धोएं।
- एक ही शेड में उसके क्षमता के अनुसार ही चूजो रखें। सही प्रकार से चूजों को जगह ना मिलने से बीमारियाँ बढ़ती हैं और साफ सफाई में मुश्किल होती है।
- ब्रायलर मुर्गियों के बिक्री के बाद शेड के लिटर को शेड के पास ना फैकें उन्हें कहीं दूर बड़े गढढे खुदवा कर गाड़ दें।

लेयर फार्मिंग अंडे देने वाली मुर्गियों (लेयर या एग्गर)

- लेयर फार्मिंग, जिसमें एक दिन के चूजे रखें जाते हैं करीब पाँच महीने बाद ये अंडे देने लगते हैं और एक साल अंडे लेने के बाद इन मुर्गियों को बेच दिया जाता है।
- लेयर फार्म में आरंभिक पूंजी अधिक लगती है और आमदनी करीब छह महीने बाद शुरू होती है। परन्तु ब्रायलर फार्मिंग की तुलना में यह सरल काम है।
- फार्म में छोटे पेड़ जैसे शहतूत, मौसमी, अमरूद आदि छाया के लिए लगाने चाहिए।
- लेयर में रानीखेत गुम्बोरो आदि के टीके लगाने के साथ ही हिपेटाइटिस के टीके भी लगवाऐ।
- मुर्गी पालन करने वालों के लिए आवश्यक है कि तापमान की तेजी से मुर्गियों को बचाया जाए, क्योंकि मौसमी उतार–चढ़ाव से इनकी मृत्यु दर बढ़ सकती है। मुर्गियों में अधिक मृत्यु दर होने से किसान या मुर्गीपालकों को भारी वित्तीय हानि उठानी पड़ सकती है। गर्मी के मौसम में थोड़ी सावधानी से मुर्गियों को तेज गर्मी के प्रकोप से बचाया जा सकता है।
- अंडे देने वाली मुर्गियों (लेयर सा एग्गर) में तापमान सहने की क्षमता मांस के लिए पाली जाने वाली मुर्गियों (ब्रायलर) की तुलना में अधिक होती है।

- भारत में खेती के अलावा पशुपालन व्यवसाय भी अपना एक महत्त्व रखता है। देश की स्वतंत्रता के पश्चात पशुपालन के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है और मुर्गी पालन व्यवसाय ने अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त कर लिया है। इस व्यवसाय द्वारा छोटे एवं मध्यम वर्ग के किसानों को पूंजी शीघ्र ही नियमित रूप से प्राप्त हो जाती है और घर के पिछवाड़े में आसानी से 20–30 मुर्गीयों को रखा जा सकता है।

- मुर्गीयां 18 सप्ताह की उम्र के बाद से अण्डा देना आरंभ करती हैं तथा लगभग 72 सप्ताह तक अण्डा देती रहती हैं परन्तु लगभग एक वर्ष बाद अण्डे की मात्रा कम हो जाती है ।

- प्रथम एक वर्ष तक तो अण्डा उत्पादन के प्रतिशत 80 से 85 प्रतिशत का हो जाता है। एक अच्छी अण्डे देने वाली मुर्गी की पहचान यह है कि उसकी कंलगी लाल रंग की होती है।

- आँखों में चमकीलापन तथा पंजे लाल पीले होते हैं।

- किसी भी मुर्गी को अण्डे देने वाली अवस्था में संतुलित आहार देकर रोगों से बचाव कर उससे अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

मुर्गीयों की आवास वयवस्था :–

स्थान का चुनाव :– मुर्गी शैड के लिए स्थान का चुनाव निमन बातों में रखकर किया जाना चाहिए :–

- आवास हमेशा सुरक्षित स्थान पर होना चाहिए जहां पर उनके प्राकृतिक शत्रु जैसे कुत्ता, बिल्ली, सांप व नेवला की पहुंच न हो।
- मुर्गीयों का आवास हमेशा बस्ती या गांव से दूर होना चाहिए।
- सूर्य का प्रकाश पर्याप्त मात्रा में मिलना चाहिए एवं प्रत्येक मुर्गी को रहने के लिए पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए।
- आवास ऐसे स्थान पर होना चाहिए जहां दाना, फीड आसानी से उपलब्ध हो सकें साथ ही जहां पर माल की बिकी भी आसानी से हो सके।
- मुर्गी फार्म के लिए स्थान का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वहां पर यातायात के साधनों की उपलब्धता आसानी से हो सके।

आवास व्यवस्था :–

1. पिंजरा सा दड़बा प्रणाली :–

इस प्रणाली में लोहे के मोटे तार द्वारा बने हुए पिंजरे में 2–3 मुर्गीयों को एक साथ रखा जा सकता है तथा सामने की और पानी व दाने की व्यवस्था की जाती है पिंजरे

का फर्श ऐसा होता है कि अण्डा लुढ़क कर सामने निर्धारित स्थान पर आकर रूक जाता है तथा टूटता नहीं है। एक हवादार मकान में 2 – 3 मंजिल तक के केज बनाए जाते हैं। मुर्गी की बीठ नीचे गिरती रहती है जिसको समय–समय पर साफ किया जाता है या नीचे ऐसे गड्डे बनाए जाते हैं ताकि आसानी से बीठ उठाई जा सके। इस विधि में बिमारी अधिक नहीं फैलती है तथा आहार का खर्चा भी अधिक नहीं होता है।

2. डीप लीटर प्रणाली :–

इस प्रणाली में मुर्गीघर में लीटर (बिछावन) बिछाकर पक्षियों को रखा जाता है। इसमें मुर्गी पूरे घर में सवेच्छा पूर्वक घूमती रहती है। घर में मुर्गी के खाने, पीने व अण्डे देने की पूर्ण व्यवसाय प्रति 10 फूट की दूरी पर होती है। लीटर (बिछावन) हेतू मूंगफली के छिलके, चावल का भूसा, गेहूं का भूसा, कुट्टी एवं लकड़ी का बुरादा आदि प्रयोग किया जाता है। लीटर बिछाने से अभिप्राय मुर्गी की बीठ की नमी को सोखने से होता है। एक लेयर (अण्डे देने वाली मुर्गी) के लिए डीप लीटर प्रणाली के अंतर्गत रखे जाने पर प्रति पक्षी 2 से 2.5 वर्ग फुट स्थान की आवश्यक्ता होती है तथा ब्रायलर पक्षी के लिए 0.75 से 1 वर्ग फुट प्रति पक्षी स्थान की आवश्यक्ता होती है। इस प्रणाली में उचित तापमान 45 डिग्री फॉरनेहट होता है। इस तापमान पर अण्डा उत्पादन ठीक रहता है, इससे अधिक तापमान होने पर अण्डों की संख्या कम व आकार छोटा हो जाता है। सामान्यमः डीप लीटर प्रणाली के अंतर्गत मुर्गी घर में 40

– 70 प्रतिशत नमी रहनी चाहिए। इस प्रणाली में मुर्गीघर में रोशनदान की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए ताकि स्वस्थ हवा की प्राप्ति व अशुद्ध हवा के निकलने के लिए पर्याप्त स्थान हो।

मुर्गीयों का भोजन :–

मुर्गीयों के दांत नहीं होते हैं। मुर्गी के आहार में बारीक अनाज, खजियां, मछली चूर्ण, दूध के उत्पाद, जवण मिश्रण खिलाने चाहिए। मुर्गियों के भोजन का संतुलित होना बड़ा आवश्यक है। मनुष्य की भांति इनके भोजन में वसा, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, लवण, विटामिन तथा पानी का होना अति आवश्यक है। इसकी पूर्ति के लिए सोयाबीन देना लाभदायक है। सोयाबीन से प्रोटीन, वसा एवं अमीनो अम्ल उचित मात्रा में मिल जाते हैं। अण्डा देने तथा ब्रायलर मुर्गियों को अत्यधिक रेशे वाले पदार्थ नहीं खिलाने चाहिए, इनके खिलाने से अण्डा उत्पादन तथा मांस उत्पादन कम हो जाता है।

मुर्गी दाना से जुड़ी जानकारी –

- अंडे देने वाली मुरगी को लगातार अंडे देने के लिए 2500 से 2650 किलोग्राम कैलोरी वाले फीड की जरूरत होती है, उम्र और अंडे के वजन के मुताबिक ही फीड की कैलोरी तय की जाती है।
- 1 से 7 हफ्ते के चूजे को 2900 किलोग्राम कैलोरी की फीड, जबकि ग्रोवर को 2800 किलोग्राम कैलोरी की फीड देनी चाहिए।
- मुर्गी दाने और फीड बनाने वाले मिश्रण (मक्का वगैरह) में नमी कभी भी 10–11 फीसदी से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। अगर मक्के में नमी ज्यादा होती है, तो

पोस्टर्माटम–एक आवश्यकता या समय की बर्बादी

जब मृत्यु के बाद मृतक के शरीर को मौत का कारण जानने के लिए खोला जाता है और शरीर के अंदरूनी अंगों की जांच की जाती है तो इस प्रकिया को पोस्टमार्टम कहा जाता है, अगर हम पोल्ट्री फार्मिंग के धंधे के साथ जुड़े हुए हैं जो कि बहुत ही नाजुक पक्षी है और इस धंधे से मुनाफा/फायदा लेने के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि हम इस धंधे की हर बारीकियों पर ध्यान दें ताकि किसी भी कारण हमें अंत में नुक्सान न उठाना पड़े।

कई बार तो प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण फार्म में मौत की आंधी सी छा जाती है और संभवतः भारी नुक्सान का सामना करना पड़ता है और ऐसी परिस्थितियों में एक किसान का मानसिक संतुलन बिगड़ना एक सामान्य बात है। कई बार तो इन परिस्थिातियों में तो किसान अक्सर गलत कदम उठा लेते हैं, जैसे कि मौत का कारण जाने बिना हम मृतक पक्षियों को कम रेट पर बेच कर अपने नुक्सान की कुछ हद तक भरपाई करने की कोशिश भी करते हैं। ऐसे करके हम ग्रहकों को धोखा न देकर खुद को ही धोखा देते हैं या फिर कहा जाए कि एक छोटे नुकसान की भरपाई के लिए हम खुद को एक बड़े नुक्सान में झोंक देते हें। भाव यह कि ऐसे करने से हम मौत की आंधी का कारण जानने से चूक जाते हैं और संभव है कि इससे बीमारी फैलने वाले कीटाणु, जीवाणु, विषाणु हमारे पोल्ट्री शैड में ही रह जाते हैं और हम फिर दोबारा उसी शैड में रखे जाने वाले नए पक्षियों एवं पहले से ही मौजूद पक्षियों को प्रीभावित करते हैं, जिससे हमें दोहरे नुक्सान का सामना करना पड़ता है।

- सबसे पहले मृतक पक्षी को साबुन के घोल से अच्छी तरह धोना चाहिए ताकि पंखों आदि को आसानी से उतारा जा सके और अगर कोई बाहरी पदार्थ इन पंखों के साथ चिपका हो तो उसको भी आसानी से अलग किया जा सके।
- पक्षी को पीठ के बल लिटाते हुए उसकी छाती को ऊपर की तरफ रखा जाता है और उसके सिर को खुद से दूसरी तरफ दूर रखना चाहिए।
- ऊपर श्वास प्रणाली के परीक्षण के लिए चोंच के ऊपर के हिस्से को नाक के छिद्र से होते हुए काटना चाहिए और इसके बाद आंखों का किसी भी प्रकार की सीजन, लालिमा और कोई सफेदी इत्यादि के लिए निरिक्षण किया जाता है।
- मुंह और कंठ–नाल की जांच करने के लिए मुंह को एक तरफ से कैंची के साथ काटा जाना चाहिए।
- फिर मुंह की तरफ से कंठनाल एवं श्वास नली को काटा जाना चाहिए और श्वास नली को लंबाई में काट कर बलगम और खून इत्यादि के अवशेष के लिए

देखा जाता है।

- छाती के नीचे की मांसपेशियों का निरीक्षण करने के लिए छाती के ऊपर की चमड़ी को खींच कर उतारा जाता है।
- फिर टांगों के नीचे हाथ रखते हुए टांगों को इस प्रकार दबाया जाता है कि जांघ की हड्डी टूट जाए और टांगे शरीर से अलग हो जाएं। फिर टोगों की चमड़ी उतार कर टांगों का निरिक्षण बिंदी नुमा खून के स्त्राव के लिए किया जाता है।
- छाती की हड्डी के किनारे से शुरू करते हूए दोनों तरफ के पंखों तक पेट की मांसपेशियां काटी जाती है। कंधों के जोड़ को तोड़ कर, छाती की हड्डीयों को हटा दिया जाता है।
- झिल्लीदार थैलियों का बलगम आदि की मौजूदगी के लिए निरिक्षण किया जाता है।
- इसके बाद जिगर एवं ताप–तिल्ली का निरिक्षण खून के स्त्राव, सोजिश एवं रंग के बदलाव के लिए किया जाना चाहिए।
- इसके पश्चात् जिगर, दिल और ताप–तिल्ली को शरीर से अलग कर दिया जाना चाहिए ताकि पाचन प्रणाली में अगर कोई गिल्टी, सूजन या फिर रक्त का स्त्राव हो तो उसका आसानी से पता चल सके।
- पाचन प्रणाली को खोलते हुए सबसे पहले पोटे का निरिक्षण किसी प्रकार के कीड़े की मौजूदगी के लिए किया जाना चाहिए एवं तत्पश्चात् मिहदा नाली का निरिक्षण खून के स्त्राव एवं किसी प्रकार की सफेद तह के लिए किया जाता है।
- पेट का निरिक्षण किसी किस्म के जख्मों आदि के लिए किया जाना चाहिए।

मुर्गीपालन में कैरियर संबंधित विस्तृत जानकारी–पोल्ट्री व्यवसाय में जाने के लिए किस तरह की शिक्षा जरूरी है ?

- पोल्ट्र व्यवसाय में जाने के लिए शिक्षा से अधिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। यह व्यवसाय शुरू से पहले किसी अच्छे संस्थान से ट्रेनिंग लेनी चाहिए।
- मुर्गीपालन के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है ?
- यह व्यवसाय छोटे पैमाने पर किया जाए या बड़े पैमाने पर, एक सफल कुक्कुट फार्म चलाने के लिए उसमें लाभ लेने के लिए पांच बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

1. अच्छी नस्ल के चूजे
2. संतुलित आहार
3 रोग नियंत्रण के लिए चिकित्सा संस्थान निकट हो
4 अच्छा रखरखाव
5. समुचित व्यवसथा।

यदि इन पांच में से एक भी बात कम पाई जाती है तो व्यवसाय में नुक्सान हो सकता है।

- इस व्यवसाय में आय मुर्गियों के पालन–पोषण व रख–रखाव पर निर्भर करता है। औसतन 1000 ब्रायलर के लॉट पर कम से कम 15 से 20 हजार कमाए जा सकते हैं और साल में इस तरह के आठ लॉट निकाले जा सकते हैं। कम लागत का यह बड़ा व्यवसाय है।

अंडे खाने के फायदे

अंडे खाने, शरीर को जरूरी विटामिन व मिनरल्स मिलते हैं । लेकिन ज्यादा अंडा खाना भी नुकसानदेह हो सकता है । इसलिए अपने नाश्ते में अंडे को शामिल करने से पहले इनके फायदे व नुकसान के बारे में जान लिजिए ।

- अंडे को प्रोटीन, कैल्शियम व ओमेगा – 3 फैटी का अच्छा स्त्रोत माना जाता है । यह सभी पोशक तत्व हमारे शरीर में अच्छेश कोलेस्ट्राल यानि एचडीएल का निर्माण होता है इसके अलावा कैल्शियम से दांत व हडियां मजबूत होती हैं ।
- अंडे खाने से आपके शरीर को जरूरी अमीनो एसिड मिलाता है जिससे शरीर का स्टैमिना बढ़ता है ।
- अंडे में विटामिन ए पाया जाता है जो बालों को मजबूत बनाने के साथ आंखों की रोशनी बडाता है ।
- अंडे में मिलने वाला फोलिक एसिड व विटामिन बी 12 स्तन कैसर से बचाता है । विटामिन बी 12 दिमागी प्रकिया में प्रकिया में मदद करता है स्मरण शक्ति बढाता है ।
- अंडे की जर्दी में प्रकिया में मदद करतर है, जो हडियों को मजबूत बनाता है साथ ही शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढाता है ।
- गर्भवती महिलाओं को अपने क्षाने में अंडे को जरूर शामिल करना चाहिए यह भ्रूण के विकसित में मदद करता है ।
- वनज को लेकर सतर्क रहने वाले लोगों को अंडे का सफेद वाला हिस्से खाना चाहिए । इसमें फैट नहीं होता है ।

अंडे खाने के नुकसान

- अंडा खाने से पहले यह सुनिश्चित कर ले कि वह अच्छी तरह से पकाया गया हो, क्योंकि अधपके अंडे से साल्मोनेला का खतरा रहता है जिससे फूड प्वांजनिंग हो सकती है । अंडे को ठीक से नहीं पकाने पर इससे सूजन, उल्टी व पेट की अन्य समस्या हो सकती है ।

- हमेशा अंडे किसी अच्छी दुकान से लेना चाहिए, क्योंकि इससे खाने संबंधी कई रोग आसानी से हो सकते हैं ।

- जिन लोगों को हाई ब्लड प्रशेर, डाइबिटीज व हदय संबंधी रोग है , उन्हें अंडे का पीला वाला हिस्सा नहीं खाना चाहिए । इसमें बहुत ज्यादा मात्रा में कोलोस्ट्रोल होता है । जो हदय के लिए नुकासानदेह है ।